अध्याय–3

महाकवि का जीवन–परिचय तथा कृतित्व

(क) महाकवि पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी का जीवन परिचय

जन्म :– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी का जन्म एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आपके बाबा श्री छेदीलाल जी प्रसिद्ध धनी–मानी उद्योगपति थे। आपके पिता श्री बलरामदास जी और माता श्रीमती वसुमती देवी थीं। आपके पिता एक त्यागी, तपस्वी समाजसेवी थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देशसेवा में लगाया। आपके पिताजी और माताजी स्वतंत्रता संग्राम–सेनानी थे। वे तीन बार कांग्रेस के आन्दोलन में जेल गए। डॉ0 द्विवेदी जी का जन्म 6 दिसम्बर 1918 को हुआ। आपके पिताजी ने आपके जन्म से पहले दो निर्णय लिए थे कि बालक का नाम कपिलमुनि के नाम पर कपिलदेव रखा जाएगा और उसे शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाएगा। पूर्व निर्णय के अनुसार बालक का नाम कपिलदेव रखा गया और कक्षा 4 तक अध्ययन के बाद गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में संस्कृत की उच्च शिक्षा के लिए भेजा गया।

शिक्षा दीक्षा :– 10 वर्ष की आयु में डॉ0 द्विवेदी को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट कराया गया। आपने 1928 से 1939 तक गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त की। गुरुकुल में रहते हुए आपने शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की और आपको गुरूकुल की उपाधि विद्याभास्कर प्राप्त हुई। सभी परीक्षाओं में आप प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान पर रहे। यहाँ रहते हुए आपने यजुर्वेद और सामवेद दो वेद कंठस्थ किए और उसके परिणामस्वरूप गुरुकुल से द्विवेदी की उपाधि प्रदान की

गई। आपने गुरूकुल में रहते हुए बंगला और उर्दू भाषा भी सीखी। साथ ही आपने भारतीय व्यायाम, लाठी, तलवार, युयुत्सु और पिरामिड बिल्डिंग आदि की शिक्षा भी प्राप्त की। गुरूकुल में रहते हुए आप 1939 में स्वतंत्रता संग्राम के अंग हैदराबाद आर्य–सत्याग्रह आन्दोलन में 6 मास कारावास में रहे। आप भी अपने पिता के तुल्य स्वतंत्रता सेनानी थे।

शैक्षणिक योग्यता :– आपने पंजाब विश्वविद्यालय से 1946 में प्रथम श्रेणी में प्रथम रहते हुए एम0ए0 संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहीं से एम0.ओ0एल0 की उपाधि भी आपको प्राप्त हुई। तदनन्तर इलाहाबाद विश्विविद्यालय से संस्कृत में डॉ0 बाबूराम सक्सेना के निर्देशन में भाषाविज्ञान विषय में 1949 में डी0 फिल्0 की उपाधि प्राप्त की। आपने संस्कृत यूनिवर्सिटी वाराणसी से व्याकरण विषय में आचार्य की उपाधि प्रथम श्रेणी मे सर्वप्रथम रहते हुये उत्तीर्ण की। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आचार्य डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में प्रथम श्रेणी में एम0ए0 (हिन्दी) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। आपने अनेक भाषाओं में विशेष योग्यता प्राप्त की। प्रयाग विश्वविद्यालय से आपने जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी आदि भाषाओं में प्रोफिसिएन्सी परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके अतिरिक्त पालि, प्राकृत, बँगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू में भी आपने विशेष दक्षता प्राप्त की है।

पारिवारिक जीवन :– डॉ0 द्विवेदी का जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा है। आपने जीवन भर संघर्ष किया है। आपका विवाह 1953 में चन्दौसी निवासी श्री रामशरणदास की पुत्री ओम्शान्ति से हुआ। आपके पाँच पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। प्रायः सभी एम0ए0/एम0एस–सी0, पी–एच0डी0 हैं। आप उच्चकोटि के साधक रहे। 1942 में योग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद योग आपके दैनिक जीवन का

अंग रहा। आप नियमित रूप से योगाभ्यास करते रहे। आपने अपने अनुभव साधना और सिद्धि में दिए हैं। आपकी पत्नी का निधन 28 दिसम्बर 1973 को प्रातः 5 बजे हुआ। आपने माँ और पिता दोनों के दायित्व का निर्वहन करते हुए परिवार को संरक्षण दिया। आपने 93 वर्ष की अवस्था में 28 अगस्त 2011 को 1 बजे अपरान्ह में इस भौतिक शरीर का परित्याग किया।

शैक्षणिक सेवाएँ :– आप 1940 से 1944 तक नारायण स्वामी हाईस्कूल रामगढ़ नैनीताल में संस्कृत–शिक्षक रहे। तदनन्तर 1950 से 1954 तक सेंट एन्ड्रयूज कालेज गोरखपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे है। नवम्बर 1954 से मार्च 1965 तक देव सिंह बिष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनीताल में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे। मार्च 1965 से जुलाई 1977 तक काशी–नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर भदोही में संस्कृत विभागाध्यक्ष, उपाचार्य एवं प्राचार्य पदों पर रहे। अगस्त 1977 से जून 1978 तक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर (चमोली) में प्राचार्य रहे। वहाँ से 30 जून 1978 को राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त किया। तदनन्तर 1980 से 1992 तक गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में कुलपति रहे। आप 1979 से 2011 तक विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर के निदेशक रहे।

ग्रन्थ–लेखन :– डॉ0 द्विवेदी की प्रथम पुस्तक ' संस्कृतरत्नावली' यू0पी0 बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा में संस्कृत की पाठय पुस्तक के रूप में निर्धारित हुई। इससे आपको पर्याप्त यश मिला। इसके पश्चात् आपने रचनानुवाद–कौमुदी 1952 में लिखी। निरन्तर लेखन साधनारत रहते हुए आपने 75 से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन 92 वर्ष की अवस्था तक किया।

विशिष्ट सेवा :– डॉ0 द्विवेदी की गणना विश्व के प्रमुख प्राच्यविद्याविदों, भाषाविदों और वेदविदों में की जाती है। आप संस्कृत भाषा के सरलीकरण पद्धति के उन्नायक एवं प्रवर्तक माने जाते हैं। संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में अपका महत्वपूर्ण योगदान है। वेदों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए आपने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के 40 भागों का प्रकाशन किया है।

विदेश यात्रा :– आपने 5 बार विदेश यात्राएं की। आपने भारतीय संस्कृति के प्रचार के लिए 1976, 1989, 1990, 1992 और 1993 में विदेश यात्रा की है। इनमे ये देश सम्मिलित हैं– अमेरिका (उत्तरी और दक्षिणी), कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड, फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैण्ड, सूरीनाम, गुयाना, मारीशस, केनिया, तांजनिया और सिंगापुर।

(ख) महाकवि डॉ0 कपिल देव द्विवेदी को प्राप्त सम्मान, अभिनन्दन एवं पुरस्कार :–

1. संस्कृत साहित्य में 'पद्मश्री' अलंकरण से विभूषित हुए। 2. भारतीय विद्याभवन बंगलौर द्वारा गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार 2005। 3. महर्षि वाल्मीकि सम्मान 2010–211 (डेढ़ लाख रू0) से 24.08.2011 को सम्मानित। 4. भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 2010 को संस्कृत भाषा की सेवा के लिए 'राष्ट्रपति सम्मान'। 5. ''विशिष्ट पुरस्कार'' उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान (1992) द्वारा (25000 रु0) संस्कृत साहित्य की विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया गया। 6. 'वेद–पडित' पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन द्वारा 1995। 7. ''पण्डित राज जगन्नाथ संस्कृत पद्य रचना पुरस्कार'' दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत मौलिक काव्य रचना ''आत्मविज्ञानम्'' (संस्कृत महाकाव्य) पर 1997 में। 8. ''बीरबल साहनी पुरस्कार'' 1993 में ''वेदों में आयुर्वेद'' पर (11,000 रु0)

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा। 9. के0एन0 भाल पुरस्कार वर्ष 2000 में 'वेदों में विज्ञान' ग्रन्थ पर (20,000 रू0) उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा, 10. हजारी प्रसाद द्विवेदी अनुशंसा पुरस्कार 1988, अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, ग्रन्थ पर उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा। 11. वेद वेदांग पुरस्कार (25000रू0), आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई (2000), 12. आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार (1999) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा। 13. संस्कृत वर्ष सम्मान पत्र, सम्पूर्णानन्द सं0 वि0वि0, वाराणसी (2000), 14. राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सहस्त्राब्दि सम्मान (23.09.2000) सहस्त्राब्दि विश्व हिन्दी सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा, 15. वैदिक विद्वान् पुरस्कार (1994) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, 16. विद्यामार्तण्ड स्वामी धर्मानन्द स्मृति पुरस्कार (5000रू0) 1998, आर्य वानप्रस्थ एवं विरक्त आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार। 17. श्ब्मतजपबपंजम वि भ्वदवनतश श्प्दजमतदंजपवदंस ब्वदमितमदबम वद भ्पेजवतल वि डंजीमउंजपबेश (गुरुकुल कांगड़ी वि0वि0 हरिद्वार) (16 दिसम्बर 1999)। 18. 'ज्ञानगिरि' सम्मान प्रशासनिक अध्ययन संस्थान मुजफ्फरपुर (11.02.1999), 19. रत्नप्रकाश मेमोरियल ट्रस्ट गोरखपुर द्वारा 'रत्नप्रकाश सम्मान 2006' से, 20. 'आर्य विभूषण पुरस्कार 2008' (रू0 बीस हजार) राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबुल ट्रस्ट नागपुर द्वारा। 21. श्स्पमिजपउम ।बीपमअमदउमदज ।ंतकश इल ।सस प्दकपं ब्तचमज डंदनबिजनतमते ेवबपंजपवदए ठींकवीपण डंतबी 2011

सूरीनाम के राष्ट्रपति ने 1990 में मारीशस के राष्ट्रपति ने 1999 में आपका विशेष सम्मान किया था। विदेशों में लन्दन यूनिवर्सिटी के प्राच्य विभाग ने 1989 में, फ्रैंकफर्ट यूनिर्विसटी के हिन्दी विभाग ने 1989 में, ईस्ट–वेस्ट यूनिटी यूनिवर्सिटी न्यूयार्क ने 1990 में, टोरंटो यूनिवर्सिटी संस्कृत विभाग ने 1990 में,

सूरीनाम यूनिवर्सिटी के मेडिकल कालेज ने 1990 में, गुयाना यूनिवर्सिटी के साइंस विभाग ने 1990 में आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज शताब्दी समारोह, नई दिल्ली द्वारा 1975, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, अजमेर द्वारा 1983, आर्यसमाज शताब्दी समारोह कलकत्ता द्वारा 1985 में सम्मानित किया गया। विन्ध्य गौरव सम्मान 1999, विन्ध्य महोत्सव समिति द्वारा प्रदान किया गया।

आपकी इन रचनाओं पर उत्तर प्रदेश एवं केन्द्रीय सरकार से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं :– 1. अर्थविज्ञान और व्याकरण–दर्शन 1952, 2. संस्कृत व्याकरण 1972, 3. संस्कृत निबन्धशतकम् 1977, 4. राष्ट्रगीतांजलिः 1981, 5. भक्ति–कुसुमाञ्जलिः 1990, 6. अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन 1991, 7. वेदों में आयुर्वेद 1995, 8. आत्मविज्ञानम् 1995, 9. वेदों में राजनीतिशास्त्र–1997, 10. वेदों में विज्ञान 2004।

आपको तीन अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किए गए– 1. डॉ0 कपलदेव द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ (81 वें जन्मदिन पर), 2. अभिनन्दन भारती एवं संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना (86 वें जन्मदिवस पर), 3. सारस्वत साधना के मनीषी एवं संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान (91 में जन्मदिवस पर)।

(ग) महाकवि डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी का कृतित्व

(क) मौलिक कृतियां – काव्य ग्रन्थ

1. आत्मविज्ञानम् (योग विषयक संस्कृत महाकाव्य), 2. राष्ट्रगीतांजलिः (स्वाधीनता संग्रम का इतिहास एवं 50 राष्ट्रीय गीत), 3. भक्तिकुसुमांजलिः (संस्कृत में 100 भक्तिगीत), 4. शर्मण्याः प्राच्यविदः (ळमतउंद प्दकवसवहपेजे) 50 संस्कृत जर्मन

विद्वानों का जीवनवृत्त एवं कृतित्व संस्कृत श्लोकों में, 5. शान्तिस्तोत्रम् एवं महाप्रयाणम्, (लघु शोकगीतिकाव्य), 6. गीतांजलिः (स्फुट गीतों का संकलन), 7. संस्कृत कविह्रदयम् (संस्कृत के महाकवियों का काव्यात्मक परिचय), 8. जयतु सुरभाती।

(ख) मौलिक कृतियां – शोध ग्रन्थ

9. जीम भ्मदबम वि जीम टमकेंए 10ण । ब्नसजनतंस ैजनकल वि जीम ।जींतअं टमकंए 11ण अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन, 12. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, 13. साधना और सिद्धि (योग एवं आरोग्य), 14. वेदों में समाजशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र, 15. वेदों में राजनीति–शास्त्र, 16. वैदिक दर्शन, 17. वेदों में विज्ञान, 18. वेदों में आयुर्वेद, 19. वैदिक देवों का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप, 22. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, 23. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, 24. देववाणी–वैभव, 25. भाषाविज्ञान, 26. वेदामृतम्–सुखी जीवन, 29. वेदामृतम्–सुखी समाज, 30. वेदामृतम्– आचार शिक्षा, 31. वेदामृतम्– नीति शिक्षा, 32. वेदामृतम्– वेदों में नारी, 33. वेदामृतम्– वैदिक मनोविज्ञान, 34. वेदामृतम्– ऋग्वेद– सुभाषितावली, 35. वेदामृतम्– सामवेद– सुभाषितावली, 36. वेदामृतम्– यजुर्वेद– सुभाषितावली, 37. वेदामृतम्– अथर्ववेद–सुभाषितावली।

(ग) संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध

38. संस्कृत व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी, 39. प्रौढरचनानुवाद– कौमुदी, 40. रचनानुवाद–कौमुदी, 41. प्रारम्भिक रचनानुवाद– कौमुदी, 42. संस्कृत प्रभा, 43–47. संस्कृत शिक्षा (भाग 1 से 5), 48. संस्कृत निबन्धशतकम्, 49. लघुसिद्धान्त–कौमुदी (संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण), 50. लघुसिद्धान्त– कौमुदी

(समास एवं विभक्ति प्रकरण), 51. लघुसिद्धान्त कौमुदी (कृदन्त, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय)।

(घ) आलोचनात्मक संस्करण व्याख्या सहित

52. अभिज्ञानशाकुन्तलम, 53. उत्तरामचरितम, 54. प्रतिमानाटकम्, 55. पिंगल छन्दःसूत्रम्, 56. किरातार्जुनीयम् (सर्ग–1), 57. किरातार्जुनीयम् (सर्ग–4), 58. कठोपनिषद् (अध्याय–1), 59. शिशुपालवधम् (सर्ग–4)।

(ड.) अनूदित ग्रन्थ (हिन्दी अनुवाद)

60. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका (मेकडानल), 61. काले हायर संस्कृत ग्रामर (एम. आर.काले), 62. संस्कृत साहित्य का इतिहास (वी.वरदाचारी)।

(च) संपादित ग्रन्थ

63. श्री मोहनलाल मोहित (मारीशस) अभिनन्दन ग्रन्थ, 64. आत्मकथाः महात्मा नारायण स्वामी, 65. विश्वशान्ति–महायज्ञ–विधि, 66. वैदिक उपासना–विधि, 67. प्रभुभक्ति के गीत, 68. कुम्भपर्व महात्म्य, 69. गहमर गौरव।

(छ) अन्य ग्रन्थ

70. शकुन्तला–नाटक (हिन्दी नाटक), 71. संस्कृत रत्नावली, 72. संस्कृत गद्यतरंगिणी, 73. संस्कृत गद्यमंजरी, 74. संस्कृत गद्य–नवनीतम्, 75–77. संस्कृत कौमुदी (भाग 1, 2, 3), 78. वैदिक संध्या अग्निहोत्र, 79. आर्य समाज एण्ड इट्स मिशन, 80. संस्कृत मुक्तावली, 81. रामकथा और नए प्रतिमान।

डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी की प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

मौलिक कृतियां– शोध ग्रन्थ

1. **अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन–** सांस्कृतिक दृष्टि से अथर्ववेद अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अथर्ववेद में संस्कृति का विशद वर्णन प्राप्त होता है। डॉ0 कपिल देव द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ में अथर्ववेद के सांस्कृतिक तत्वों का विशद और वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया है। इसमें वेदों का महत्त्व, अथर्ववेद में प्राप्त भौगोलिक स्थिति, सामाजिक जीवन, आर्थिक–स्थिति, शिक्षा और विविध विद्याएँ, धर्म अभिचार कर्म और लौकिक मान्यताएं, दर्शन, राजनीति और शासन–व्यवस्था आदि पर विशद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

2. **वेदों में राजनीतिशास्त्र**– वेदों में राजनीतिशास्त्र से सम्बद्ध ज्ञान प्रचुर मात्रा में है। राजनीतिशास्त्र से सम्बद्ध समस्त सामग्री का संकलन द्विवेदी जी द्वारा इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। राजनीति शास्त्र से संबद्ध विषय– राजनीतिशास्त्र का उद्‌भव और विकास, वेदों में समाज के तत्व, राज्य की उत्पत्ति–विषयक सिद्धान्त, राज्य का स्वरूप, उद्‌देश्य और कार्य, राज्य के विभिन्न तत्व, राज्य के विविध अंग, राजा का निर्वाचन और राज्याभिषेक, राजा के विभिन्न कर्तव्य, संविधान और विधि–निर्माण, विधि निर्माण, विविध शासन–प्रणालियाँ, राज्य के प्रमुख संचालक शासन–प्रणालियाँ, राज्य के प्रमुख संचालक (राजकृत), प्रमुख संस्थाएं–सभा, समिति, विदथ और संसद, अर्थव्यवस्था (कोश), न्याय और

दंड–विधान, दूत और गुप्तचर व्यवस्था, राज्य की सुरक्षा और सैन्य–व्यवस्था, विविध शस्त्रास्त्र आदि का विवेचन है।

3. **वेदों में विज्ञान–** वेद ज्ञान और विज्ञान के ग्रन्थ है। डॉ0 कपिल देव द्विवेदी जी द्वारा इस ग्रन्थ में प्राप्त विज्ञान सम्बन्धी समस्त सन्दर्भों का बहुत परिश्रम से संकलन किया गया है। इसमें भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, जन्तुविज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, पर्यावरण और भूगर्भ विज्ञान विषयों पर वेदों में उपलबध सामग्री को वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार सन्दर्भ सहित प्रस्तुत किया गया है। साथ ही प्राचीन आचार्यों कौटिल्य, वराहमिहिर, आर्यभट्ट आदि के ग्रन्थों से भी सम्बद्ध अंशों का संकलन किया गया है। वैज्ञानिक अन्वेषण की दृष्टि से यह ग्रन्थ अनुपम है।

4. **वेदों में आयुर्वेद–** वेदों में आयुर्वेद से संबद्ध सामग्री का भण्डार है। डॉ0 द्विवेदी जी द्वारा इस ग्रन्थ में उस समस्त सामग्री का संकलन हुआ है। इस ग्रन्थ में सूत्रस्थान में आयुर्वेद के उद्देश्य, चिकित्सा के चार प्रकार, वैद्य के कर्तव्य, दीर्घायु के साधन, नीरोगता, शक्ति प्राप्ति आदि का वर्णन है। निदानस्थान में रोगों की उत्पत्ति के कारणों का उल्लेख हैं। चिकित्सास्थान में रोगों की उत्पत्ति के कारणों का उल्लेख हैं। चिकित्सास्थान में सभी रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन हैं। प्राकृतिक–चिकित्सा इस ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण अंश हैं। इसमें सूर्यकिरण चिकित्सा, वायुचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, जलचिकित्सा, मृत–चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, मनोवैज्ञानिक –चिकित्सा, मंत्रचिकित्सा, हस्तस्पर्श–चिकित्सा आदि का प्रयोगात्मक विस्तृत वर्णन हैं। प्राचीनकाल में विद्यमान शल्य

चिकित्सा, विष–चिकित्सा और पशुचिकित्सा का भी विस्तृत वर्णन हैं। ग्रन्थ के अन्त में वेदों में वर्णित 286 औषधियों का भी विस्तृत वर्णन है।

5. **वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र–:** वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र ओर शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त भी सूत्ररूप में मिलते हैं। डॉ0 द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ में उन सभी सिद्धान्तों, तथ्यों और सन्दर्भो का विशद विवेचन प्रस्तुत किया हैं। समाजशास्त्र`संबद्ध विषयों में–वर्ण–जाति, वर्णाश्रम–व्यवस्था, विविध संस्कार, नारी का गौरव, परिवार और समाज, नगर और ग्राम, भवन–निर्माण, अन्न–पान, वस्त्र–परिधान, आभूषण–अलंकरण, ललित कलाएं यातायात के विविध साधनों आदि का विवेचन किया गया है।

अर्थशास्त्र से संबद्ध विषयों में ये विषय मुख्यरूप से दिए गए हैं– कृषि, फसलें, पशुपालन, जीवजन्तुओं के विभिन्न वर्ग और नाम, औषधियों और वनस्पतियों के नाम एवं गुणधर्म, विविध शिल्प, विविध वृतियाँ, अर्थ–व्यवस्था, कोश–संचयन के साधन, उत्तराधिकार और दायभाग, व्यापार और वाणिज्य, आयात–निर्यात, विविध धातुएं, मुद्राएं आदि। शिक्षाशास्त्र से सबंद्ध विषयों में शिक्षा का महत्त्व, शिक्षा–मनोविज्ञान शिक्षक और शिष्य के गुण तथा कर्तव्य शिक्षा के विषय, शिक्षा की सामाजिक उपयोगिता आदि का वर्णन है।

6. **वैदिक दर्शन–:** वेदों में अध्यात्म और दर्शनशास्त्र से संबद्ध सामग्री प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। डॉ0 कपिल देव द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ में वेदों में अध्यात्म और दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह

ग्रन्थ 13 अध्यायों में विभक्त है। अध्याय 1 में दर्शनशास्त्र का उद्‌भव और विकास तथा दर्शनशास्त्र के महत्त्व का वर्णन है। अध्याय 2 से 5 तक विराट पुरूष, ब्रह्‌म और ईश्वर के स्वरूप का वर्णन, इनके विविध नाम–रूप, सर्वदेवमयत्व एवं उसकी प्राप्ति के साधनों का वर्णन है। अध्याय–6 में जीवात्मा के गुण–कर्म, पुनर्जन्म सिद्धान्त और कर्म–मीमांसा का विवेचन है। अध्याय 7 में प्रकृति का स्वरूप, गुण–कर्म और सूक्ष्म शरीर का वर्णन है। अध्याय 10 में विविध दार्शनिक सिद्धान्तों का वर्णन है। अध्याय 11 में मधुविद्या, प्राणविद्या, ब्रह्मविद्या आदि का विवेचन है। अध्याय 12 में सृष्टि–उत्पत्ति के सिद्धान्तों का वर्णन हैं। अध्याय 13 में ईश्वर–प्राप्ति के साधनों का वर्णन हैं।

7. **वैदिक देवों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप :–** वेद आर्य जाति के प्राण हैं। वेदों में ज्ञान का भंडार हैं। वेदों में विभिन्न देवताओं का वर्णन हैं। उनके आध्यात्मिक और वैज्ञानिक अर्थ भी हैं। इसी दृष्टि से डॉ0 द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ को दो भागों में विभक्त किया है–

1. वैदिक देवों का आध्यात्मिक स्वरूप, 2. वैदिक देवों का वैज्ञानिक स्वरूप। भाग–1 में वैदिक देवों के आध्यात्मिक और दार्शनिक स्वरूप का विवेचन किया गया है। इनमें मुख्यरूप से अग्नि, इन्द्र, सोम, मित्र–वरुण, विष्णु, मरूत्, अश्विनी, सविता, रुद्र सरस्वती, अदिति आदि का वर्णन हैं। अग्नि ऊर्जा या आत्मतत्त्व है। इन्द्र जीवात्मा, परमात्मा, ऊर्जा है। सोम प्राण तत्त्व हैं। मित्र–वरूण धनात्मक और ऋणात्मक शक्तियाँ हैं। मरूत् प्राणशक्ति हैं। अश्विनी प्राण–अपान है। सरस्वती वाक्‌तत्व है। भाग–2 में

वैज्ञानिक स्वरूप–अग्नि विश्वव्यापी ऊर्जा, विद्युत म्समबजतपबपजल है। इन्द्र उर्जा, म्दमतहल है। सोम विद्युत चुम्बकीय विकिरण है। मित्र च्तवजवद है। वरुण म्समबजतवद हैं। विष्णु ।जवउ है। मरुत् म्समबजतव. डंहदमजपब ूंअम है। सरस्वती ब्मतमइतवे.चपदंस पिअपक है। प्रस्तुत ग्रन्थ श्री डा0 द्विवेदी जी की घोर साधना का परिणाम है।

8. **वेदों में लोक–कल्याण –:** वेद आर्य जाति के प्राण–स्वरूप हैं। मनु महाराज का कथन हैं कि वेद सर्वज्ञानमय हैं। वेदों में लोक–कल्याण सम्बन्धी सामग्री प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। डॉ0 कपिल देव द्विवेदी जी इस ग्रन्थ को तीन खण्डों में विभाजित किये हैं–

1– **विश्व कल्याण–** विश्व कल्याण में विश्वकल्याण से सम्बद्ध विषय संस्कृति, सन्मार्ग और समृद्धि, कर्मठता, प्रसन्नचित्तता, नीरोगता, सामंजस्य, सुख–शान्ति आदि विषय लिए गए हैं।

2– **राष्ट्रकल्याण–** इसमें राष्ट्र के धारक तत्त्व सत्य और ऋत, राष्ट्र का स्वरूप और कर्तव्य, अन्नादि की समृद्धि, राष्ट्र एक परिवार आदि विषय हैं।

3– जन कल्याण– जन कल्याण से सम्बद्ध विषय है– जीवन–दर्शन, आत्मसाक्षात्कार, ज्ञान और कर्म का समन्वय, शिव–संकल्प पुरूषार्थ, साधना, सत्य और श्रद्धा, मन की पवित्रता, दुर्गुणों का परित्याग, राजा, स्वराज्य आदि विषय दिए गए हैं। इस ग्रन्थ में सभी लोक–कल्याणकारी तत्त्वों का विशद वर्णन किया गया हैं।

9. **अर्थ विज्ञान एवं व्याकरणदर्शन–** यह भाषा शास्त्रीय शोध ग्रन्थ है। डॉ0 द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ में अर्थविज्ञान पर भारतीय वैयाकरणों के गहन चिन्तन का विशद विवेचन किया हैं। इसमें 9 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का वर्णन है– शब्द और अर्थ का स्वरूप, अर्थविकास, अर्थनिर्णय के साधन, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, शब्दशक्ति पद और पदार्थ, वाक्य और वाक्यार्थ, स्फोटवाद और अर्थविज्ञान।

10. **साधना और सिद्धि (योग और आरोग्य)** यह योगासन और योग साधना पर लिखी गई प्रामाणिक पुस्तक हैं। इसमें योग तथा साधना से सम्बद्ध सभी विषयों का विस्तृत विवरण दिया गया हैं। आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का विस्तृत विवेचन हैं। इसमें कुण्डलिनी –जागरण और योग द्वारा 50 प्रमुख रोगों के उपचार का विवरण भी दिया गया हैं।

काव्य ग्रन्थ–

1. आत्मविज्ञानम् (संस्कृत महाकाव्यम्)– पद्म श्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी द्वारा रचित यह संस्कृत भाषा में लिखा गया महाकाव्य हैं। यह 20 सर्गों, दो हजार श्लोकों में लिखा गया योगविषयक अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। इसकी भाषा सरल और सुबोध हैं। प्रथम 5 सर्गों में अन्नमय कोश का वर्णन हैं। 2 सर्गों में प्राणयमकोश का वर्णन हैं। 5 सर्गों में मनोमय कोश का वर्णन हैं। 4 सर्गों में विज्ञानमय कोश का वर्णन हैं। अन्तिम 4 सर्गों में आनन्दमय कोश का वर्णन हैं। इस प्रकार यह 20 सर्गों वाला महाकाव्य हैं।

2. राष्ट्रगीतांजलि : (संस्कृत गीति काव्य)– डॉ0 द्विवेदी का संस्कृत भाषा में लिखा गया यह गीति–काव्य दो भागों में विभक्त हैं। प्रथम खण्ड में राष्ट्रीय–भावना–प्रधान पचास गीत प्रस्तुत किए गए हैं। द्वितीय खझउ में भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम का इतिहास 1857 से 1947ई0 तक दिया गया हैं। काव्यरूप में लिखा गया यह ग्रन्थ अमर शहीदों के प्रति श्रद्धाञजलि हैं।

3. भक्ति कुसुमांजलि : डॉ0 द्विवेदी द्वारा संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्यों की प्राचीन परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए यह ईशभक्तिपरक गीतिकाव्य लिखा गया हैं। यह गीतिकाव्य संस्कृत–साहित्य में नवीन विधा प्रस्तुत करता है।

4. शर्मण्याः प्राच्यविदः – शर्मण्याः प्राच्यविदः यह संस्कृत काव्य ग्रन्थ है। इस काव्य ग्रन्थ में 50 संस्कृत–सेवी जर्मन विद्वानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं। काव्य की भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध हैं।

5. शान्तिस्तोत्रम् एवं महाप्रयाणम्– डॉ0 द्विवेदी का यह लघु शोक–गीतिकाव्य श्रीमती ओम् शान्ति द्विवेदी की स्मृति में लिखा गया है। यह 'शान्ति–स्तोत्रम्' 112 श्लोकों में लिखा गया है।

6. गीताजंलि : यह गीताजंलि डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी के हार्दिक भावों का उन्मेष है। इनमें कुछ गीत शैशव अवस्था के हैं और कुछ प्रौढ़ अवस्था के। गीतों को सात भागों में विभक्त किया गया हैं। भाग–1 में प्रभुभक्ति–विषयक, भाग–2 में मातृवन्दना, भाग–3 में धार्मिक गीत, भाग–4 में राष्ट्रीय, भाग–5 में महापुरुषों के जीवन–वृत्तात्मक गीत, भाग–6 में प्रकृति वर्णानात्मक गीत और भाग–7 में विविध–विषयक गीत हैं।

7. संस्कृत–कवि–हृदयम्– यह डॉ0 द्विवेदी जी की अनुपम कृति हैं। इसमें संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य 32 काव्यकारों का जीवन वृत्त, कृतित्व उनके काव्यों की विशेषताएं आदि का संस्कृत पद्यों में विस्तृत विवरण दिया गया हैं। इसमें विशेष उल्लेखनीय महाकवि ये हैं– महर्षि वाल्मीकि, श्री वेदव्यास कालिदास, भारवि, माघ, श्री हर्ष। नाटककार–श्री भास, शुद्रक, भवभूति। गद्यकार–दण्डी, सुबन्धु, बाण, अम्बिकादत्त–व्यास। गीतिकार–भर्तृहरि, अमरुक, जयदेव। ऐतिहासिक काव्यकार– बिल्हण, कल्हण तथा गुणाढय। काव्य की भाषा सरल और सुबोध हैं।

8. जयतु सुरभारती– पद्य भी डॉ0 द्विवेदी के द्वारा वैदिक और संस्कृत–साहित्य के संबद्ध उच्च स्तरीय 28 संस्कृत–निबन्धों का संग्रह जयतु–सुरभारती में किया गया हैं। ज्ञानवर्धन की दृष्टि से ये निबन्ध अत्यन्त उपयोगी हैं। ये निबन्ध संस्कृत साहित्य को भी समृद्धि प्रदान करते हैं।

,,,,,,